पु॰ना International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VIII

Hindi

Specimen copy

Year- 2021-22

Semester- 2

Month-Oct-Nov

पाठ 11 – जब सिनेमा ने बोलना सीखा
लेखक- प्रदीप तिवार –

जब सिनेमा ने बोलना सीखा पाठ सार

'आलम आरा पहली सवाक फिल्म है। ये फिल्म '14 मार्च 1931 को बनी। इसके निर्देशक अर्देशिर एम ईरानी थे। इसके नायक बिट्ठल तथा नायिका जुबैदा थी। अर्देशिर को इस फिल्म को बनाने के बाद फिल्म का भारतीय सवाक्' दे दे खुदा के ना" कहा गया। इस फिल्म का पहला गाना 'पिताम था। ये फिल्म "8 सप्ताह तक हाउस फुल चली थी। इस फिल्म में सिर्फ तीन वाद्य यंत्र प्रयोग किये गए थे। आलम आरा फिल्म फैंटेसी फिल्म थी। फिल्म ने हिंदीउर्दू के - अभिनेत – गायक' तालमेल वाली हिंदुस्तानी भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसी फिल्म के उपरान्त ही फिल्मों में कई ' बड़े परदे पर नज़र आने लगे। आलम आरा भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई। इसी सिनेमा से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

शब्दार्थ

1- सजीव – ज़िंदालोकप्रियता – प्रसिद्धि
2- शिखर – उच्च स्थानखिताब – उपाधि
3- इंसान – मानवदेह – शरीर
4- सवाक् – बोलतीकेशसज्जा – बाल बनाना
5- कृत्रिम – बनावटी
6- फैंटेसी – आकर्षक
7- समीक्षकों – जांच करने वाले

सही विकल्प चुनकर लिखिए।

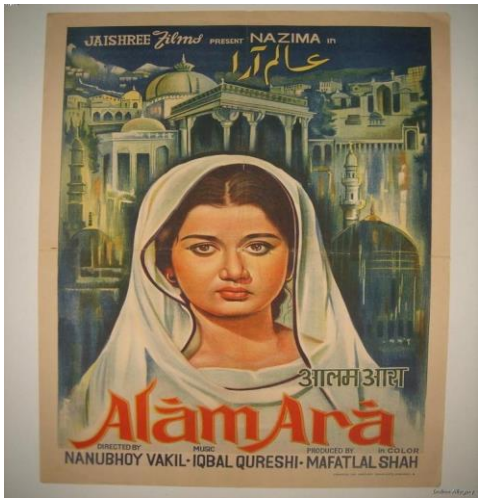

1- 'आलम आरा' फ़िल्म के पहले पार्श्वगायक थे?

(a) डब्ल्यू एम० खान (b) आर्देशिर

(c) एम० एच० खान (d) एम० एन० खान

Answer: (a) डब्ल्यू एम० खान

2- नायक के रूप में सबसे पहले किसका चयन हुआ था?

(a) विट्ठल (b) मेहबूब

(c) जुबैदा (d) याकूब

Answer: (a) विट्ठल

3- इनमें से कौन नायक और स्टंटमैन दोनों था?

(a) याकूब (b) विट्ठल

(c) सोहराब मोदी (d) मेहबूब

Answer: (a) याकूब

4- सवाक् फ़िल्मों के युग में किस भाषा का महत्त्व बढ़ा?

(a) हिंदी (b) अंग्रेजी

(c) तमिल (d) उर्दू

Answer: (a) हिंदी और (d) उर्दू

व्याकरण

- **क्रिया- विशेषण** -वह शब्द जो हमें क्रियाओं की विशेषता का बोध कराते हैं, वे शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं।-
  - दुसरे शब्दों में -जिन शब्दों से क्रिया की विशेषता का पता चलता है, उन शब्दों को हम क्रियाहिरण तेज़ भागता है। - विशेषण कहते हैं।जैसे-
  - इस वाक्य में भागना क्रिया है। तेज़ शब्द हमें क्रिया कि विशेषता बता रहा है कि वह कैसे भाग रहा है। अतः तेज़ शब्द क्रियाविशेषण है।-

1)स्थानवाचक - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के व्यापार के स्थान का पता चले उसे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।-

जैसे - यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, सामने, नीचे, ऊपर, आगे, भीतर, बाहर, दूर, पास, अंदर, किधर, इस ओर, उस ओर, इधर, उधर, जिधर, दाएँ, बाएँ, दाहिने आदि।

उदाहरण -

(i) बच्चे ऊपर खेलते हैं।
(ii) अब वहाँ अकेला मजदूर था।
(iii) तुम बाहर बैठो।
(iv) वह ऊपर बैठा है।

2) कालवाचक क्रियाविशेषण- - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के व्यापार के समय का पता चलता है, उसे कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।-

जैसे - आज, कल, परसों, पहले, अब तक, अभीअभी-, लगातार, बारबार-, प्रतिदिन, अक्सर, बाद में, जब, तब, अभी, कभी, नित्य, सदा, तुरंत, आजकल, कई बार, हर बार आदि।

उदाहरण -

(i) आज बरसात होगी।
(ii) राम कल मेरे घर आएगा।
(iii) वह कल आया था।
(iv) तुम अब जा सकते हो।

3) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण- - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के परिमाण और उसकी संख्या का पता चलता है, उसे परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।-

जैसे - बहुत, अधिक, पूर्णतया, कुछ, थोडा, काफी, केवल, इतना, उतना, कितना, थोडाथोडा-, एकएक करके-, जरा, खूब, बिलकुल, ज्यादा, अल्प, बड़ा, भारी, लगभग, क्रमशः आदि।

उदाहरण -

(i) अधिक पढो।
(ii) ज्यादा सुनो।
(iii) कम बोलो।
(iv) अधिक पियो।

4)रीतिवाचक क्रियाविशेषण - जिन अविकारी शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चलता है, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं।-

जैसे - सचमुच, ठीक, अवश्य, कदाचित, ऐसे, वैसे, सहसा, तेज, सच, झूठ, धीरे, ध्यानपूर्वक, हंसते हुए, तेजी से,

फटाफट आदि।

उदाहरण -

(i) अचानक काले बादल घिर आए।
(ii) हरीश ध्यान पूर्वक पढ़ रहा है।
(iii) रमेश धीरे धीरे चलता है।-
(iv) वह तेज भागता है।

लेखन-विभाग

जीवन में शिक्षक का महत्व निबंध

शिक्षक एक व्यक्ति को कुशल नागरिक बनाता है। शिक्षक वह प्रकाश है जो सभी के ज़िन्दगी में रोशनी भर देता है। शिक्षक एक मोमबत्ती रूपी ज्ञान का उजाला है जो लोगों को अँधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाती है। शिक्षक की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। शिक्षक अपने शिक्षा के ज़रिये व्यक्ति ,समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। उनकी शिक्षा की वजह से व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसकी वजह से वह अपने ज़िन्दगी में कुछ कर गुजरने की चाहत रखता है। शिक्षक एक खूबसूरत आईने की तरह है जिससे व्यक्ति अपने वजूद की पहचान कर पाता है। शिक्षा वह मज़बूत ताकत है जिससे हम समाज को सकारात्मक बदलाव की ओर ले जा सकते है।

शिक्षक एक सभ्य समाज का निर्माण करता है। एक बच्चे के जीवन में उसके माता -पिता उसके प्रथम शिक्षक होते है। शिक्षा की एहमित सबसे पूर्व माता -पिता ही कराते है। उसके पश्चात बच्चा विद्यालय में शिक्षक से रुबरुं होते है जो हर विषय संबंधित ज्ञान बच्चों को प्रदान करता है। अगर छात्र मार्ग भटक जाए तो शिक्षक अपने ज्ञान से उसे सही मार्ग पर ले जाता है।शिक्षक विद्यार्थिओं का मार्ग दर्शक है। ज़िन्दगी के कठिन मोड़ पर जब हम रास्ता भटक जाते है तो कोई न कोई इंसान शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाता है। कम उम्र में बच्चे का जीवन गीली मिटटी की तरह होता है। तब शिक्षक एक कुम्हार की तरह उसे शिक्षा रूप हाथों से एक मज़बूत आकार प्रदान करता है।

शिक्षक विद्यार्थिओं को आने वाले बेहतर भविष्य के लिए तैयार करते है। विद्यार्थी के मन में विषय संबंधित और जीवन संबंधित कोई भी दुविधा आये तो शिक्षक उस दुविधा को हल करने में हर मुमकिन कोशिश करता है। शिक्षक की मेहनत की वजह से कोई डॉक्टर ,कोई इंजीनियर ,कोई वकील ,पायलट ,सैनिक इत्यादि बन जाते है। अगर शिक्षक नहीं होंगे तो यह पद पर कोई व्यक्ति कार्यरत नहीं हो पाएंगे । शिक्षक इंसान को अच्छे और बुरे के बीच फर्क करना सिखाते है। वह अधर्म ,घृणा ,ईर्ष्या ,हिंसा इन बुरी आदतों से विद्यार्थिओं को दूर रहना सिखाते है। शिक्षक शिष्टता ,सहनशीलता ,धैर्य से जीवन के संघर्षों से पार करना सिखाते है।

शिक्षक हमे जीवन में अनुशासन का पाठ पढ़ाते है। समय को ठीक तरीके से जो इंसान व्यवसस्थित कर पाए वह ज़िन्दगी में सफलता को छूता है। समय का ज्ञान करना हमे शिक्षक सिखाते है।इसलिए विद्यार्थी जीवन में टाइम टेबल की बड़ी एहमियत होती है। भविष्य में भी मनुष्य इस सीख को कभी नहीं भूलता है। इससे वह कार्य को समन्वय कर सकता है।शिक्षक एक व्यक्ति में राज्य या कोई भी क्षेत्र का नेतृत्व करने के गुण सिखाती है। शिक्षक द्वारा

दी गयी शिक्षा सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण में सहायक होता है। अध्यापक को हमेशा अपने कर्त्तव्य का पालन करना पड़ता है। उनकी शिक्षा की वजह से एक शिक्षित वर्ग और समाज तैयार होता है। विद्यार्थी बड़े होकर अपने शिक्षक को कभी नहीं भूलते है। शिक्षक और विद्यार्थी का बंधन अटूट होता है। यह बन्धन सम्मान और विश्वास का होता है। विद्यार्थी शिक्षक के पैर छूकर उनका सम्मान करना कदापि नहीं भूलते है।

जैसे हमारा सांस लेना आवश्यक है। इसके बैगर हम जी नहीं सकते है। वैसे ही अध्यापक के बिना विद्यार्थी अधूरे है। शिक्षक नहीं होंगे तो वह विद्या प्राप्त करने में असमर्थ हो जाएंगे। पूरे भारत वर्ष में ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृकित कार्यक्रम आयोजित किये जाते है।सभी बच्चे शिक्षक के सम्मान में कार्ड और फूल देकर अपनी भावनाये प्रकट करते है। जब विद्यार्थी ज़िन्दगी में सफल नागरिक बन जाते है तो सबसे अधिक ख़ुशी शिक्षक को होती है। शिक्षक की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहता जब वर्षो पश्चात भी विद्यार्थी उनके सिखाये हुए चीज़ों को नहीं भूलता है। वर्षो पश्चात भी विद्यार्थी शिक्षक के पैर छूकर उनका सम्मान करना नहीं भूलते है।

उपसंहार

शिक्षक ज्ञान का महासागर है। बच्चो के भविष्य को सवारने में शिक्षक का योगदान अतुलनीय है। शिक्षक नहीं तो देश की प्रगति भी नहीं। शिक्षक अपना सारा जीवन में बच्चो के विकास में समर्पित कर देते है। उनका सम्मान विद्यार्थी तह उम्र करेंगे। शिक्षक वह ज्ञान का प्रकाश है जो अन्धकार की राह को चीरकर ज्ञान की रोशनी भर देती है।

कविता- 12 सुदामा चरित

सुदामा चरित

नरोत्तमदास

कवि : नरोत्तमदास
जन्म : सन् 1550 में
स्थान : उत्तर-प्रदेश के सीतापुर जिले में।
मृत्यु : सन् 1605

- **कविता का सार**

'सुदाम चरित्र' कृष्ण और सुदाम पर आधारित एक बहुत सुन्दर रचना है। इसके कवि नरोत्तम दास जी हैं, नरोत्तम दास जी ने इस रचना को दोहे के रूप में प्रस्तुत किया है और ऐसा लगता है जैसे दोहा न हो कर श्री कृष्ण और सुदामा की कथा पर आधारित नाटक प्रस्तुत हो रहा है। 'सुदामा चरित' के पदों में नरोत्तम दास जी ने श्री कृष्ण और सुदामा के मिलन, सुदामा की दीन अवस्था व कृष्ण की उदारता का वर्णन किया है। सुदामा जी बहुत दिनों के बाद द्वारिका आए। कृष्ण से मिलने के लिए कारण था, उनकी पत्नी के द्वारा उन्हें जबरदस्ती भेजा जाना। उनकी अपनी कोई इच्छा नहीं थी। बहुत दिनों के बाद दो मित्रों का मिलना और सुदामा की दीन अवस्था और कृष्ण की उदारता का वर्णन भी किया गया है। किस तरह से उन्होंने मित्रता धर्म निभाते हुए सुदामा के लिए उदारता दिखाई, वह सब किया जो एक मित्र को करना चाहिए। साथ ही में उन्होंने श्री कृष्ण और सुदामा की आपस की नोक झोक का बड़ी ही-कुशलता से वर्णन किया है। इसमें उन्होंने यह भी दर्शाया है कि श्री कृष्ण कैसे अपने मित्रता धर्म का पालन बिना सुदामा के कहे हुए उनके मन की बात जानकर कर देते हैं। मित्र का यह सबसे प्रथम कर्तव्य रहता है कि वह अपनी मित्र के बिना कहे उसके मन की बात और उसकी अवस्था को जान ले और उसके लिए कुछ करें और उदारता दिखाऐं यही उसकी महानता है।

- **नए शब्द**

1) पगा 2) झगा
3)कंटक 4) पुनिजोए

5)चाबि 6) ओड़तफिरे
7)वैसोई 8) कंचन
9)पनही 10) पर्याउे

- **शब्दार्थ**

1)पगा- पगड़ी 2) झगा- कुरता
3) तन- शरीर 4) द्वार- दरवाजा
5) खड़ो- खड़ाहै 6) द्विजदुर्बल- दुर्बल ब्राहमण
7) ऐसेबेहाल- बुरेहाल 8) बिवाइनसों- फटी ऐड़िया
9) पग- पाँव 10) कंटक- काँटा
11) पुनिजोए- निकालना 12)कछु- कुछ
13) काहे न देत- किसकारण 14)चाँपि- छिपाना
15) पोटरी- पोटली 16) चाबि- चबाना
17) उठिमिलनि- गलेमिलना 18)पठवनि- भेजना
19) जात- जाति 20)हरि- कृष्ण
21) राज-समाज- राज्यमें 22) ओड़तफिरे- इधर उधर फिरना
23) तनक- थोड़ा 24) वैसोई- वैसे
25) गज-बाजि- हाथीघोड़ा 26)संभ्रमछायो- भ्रम हो गया
27) पर्याउे- अनजान 28) मारग- रास्ता
29) छानी- झोंपड़ी 30) कंचन- सोने
31) धाम-महल 32) पनही- जूता
33) गजराजहु- हाथियों के ठाट-बाट

सही विकल्प चुनकर लिखिए।

1- इस कविता के रचयिता हैं?
(a) सूरदास (b) मतीनदास
(c) नरोत्तम दास (d) नर्ददास
Answer: (c) नरोत्तम दास

2- सुदामा कहाँ जा रहे थे?
(a) मंदिर (b) अपनी पत्नी के गाँव
(c) अपने मित्र कृष्ण के पास (d) अपने पिता जी से मिलने
Answer: (c) अपने मित्र कृष्ण के पास

3- द्वार पर खड़े व्यक्ति की धोती कैसी थी?
(a) पीतांबरी (b) फटी सी
(c) रंगीन (d) सफ़ेद
Answer: (b) फटी सी

4- श्रीकृष्ण ने सुदामा की दशा कैसी देखी?
(a) दयनीय (b) ठीक-ठा

(c) हीन (d) अच्छी Answer: (a) दयनीय

5- श्रीकृष्ण ने सुदामा के पाँव कैसे धोए?

(a) परात में जल लेकर (b) अपने अश्रु से

(c) साबुन से (d) गंगाजल से

Answer: (b) अपने अश्रु से

6- सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप क्या दिया था?

(a) सूखा मेवा (b) तंदुल

(c) मिठाई (d) मिश्री

Answer: (b) तंदुल

➢ प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

प्रश्न-1 सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर – सुदामा की दीनदशा को देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले की उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

प्रश्न-2 "पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।" पंक्ति में वर्णित भाव का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत दोहे में यह कहा गया है कि सुदामा की दीनदशा को देखकर श्रीकृष्ण व्याकुल हो उठे। श्रीकृष्ण ने सुदामा के आगमन पर उनके पैरों को धोने के लिए परात में पानी मँगवाया परन्तु सुदामा की दुर्दशा देखकर श्रीकृष्ण को इतना कष्ट हुआ कि वे स्वयं रो पड़े और उनके आँसुओं से ही सुदामा के पैर धुल गए।

प्रश्न-3 अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्याक्या विचार आए-?

उत्तर जब सुदामा अपने गाँव पहुँचे तो -वहाँ का दृश्य पूरी तरह से बदल चुका था। अपने सामने आलीशान महल, हाथी घोड़े, बाजे गाजे, आदि देखकर सुदामा को लगा कि वे रास्ता भूलकर फिर से द्वारका पहुँच गए हैं। थोड़ा ध्यान से देखने पर सुदामा को समझ में आया कि वे अपने गाँव में ही हैं। वे लोगों से पूछते हैं लेकिन अपनी झोपड़ी को खोज नहीं पाते हैं।

प्रश्न-4 द्रुपद और द्रोणाचार्य भी सहपाठी थे, इनकी मित्रता और शत्रुता की कथा महाभारत से खोजकर सुदामा के कथानक से तुलना कीजिए।

उत्तर – कृष्ण और सुदामा साथ साथ आश्रम शिक्षा ग्रहण करते थे। उसी प्रकार महाराज द्रुपद तथा गुरू द्रोणाचार्य भी- आश्रम में एक ही साथ शिक्षा ग्रहण करते थे तथा परम मित्र थे। सुदामा के द्वारका जाने पर श्रीकृष्ण ने उनका आदर सत्कार किया था। परन्तु-जब गुरू द्रोणाचार्य अपने मित्र राजा द्रुपद के पास गए तब राजा द्रुपद ने उनका अपमान किया। महाभारत के युद्ध में द्रुपद तथा गुरू द्रोणाचार्य ने एक दूसरे के विपरीत युद्ध करके दुश्मनी का परिचय दिया।

प्रश्न-5 द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्याक्या सोचते जा रहे थे-? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे? सुदामा के मन की दुविधा को अपने शब्दों में प्रकट कीजिए।

उत्तर – सुदामा जिस उम्मीद से कृष्ण से मिलने गये थे, उसका कुछ भी नहीं हुआ। कृष्ण के पास से वे खाली हाथ लौट रहे थे। लौटते समय सुदामा थोड़े खिन्न भी थे और सोच रहे थे कि कृष्ण को समझना मुश्किल है। एक तरफ तो उसने इतना सम्मान दिया और दूसरी ओर मुझे खाली हाथ लौटा दिया। मैं तो जाना भी नहीं चाहता था, लेकिन पत्नी ने मुझे जबरदस्ती कृष्ण से मिलने भेज दिया था। जो अपने बचपन में थोड़े से मक्खन के लिए घरघर भटकता था उससे कोई उम्मीद करना ही बेकार है।-

व्याकरण

➢ वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाच्य में क्रिया द्वारा किए गए व्यापार का विषय कर्ता, कर्म अथवा भाव में से कौन है, उसे वाच्य कहते हैं। वाच्य के तीन भेद होते हैं

1. कर्तृवाच्य
2. कर्मवाच्य
3. भाववाच्य

1. **कर्तृवाच्य –** जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता हो तथा क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं।
   जैसे- नेहा दौड़ रही है।
   मैं व्यापार करता हूँ।
2. **कर्मवाच्य –** क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का प्रयोग कर्म के अनुसार हुआ है यानी इसके लिए लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार हैं, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।
   जैसे- अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाता है।
3. **भाववाच्य –** जहाँ वाक्य में भाव की प्रधानता होती है और क्रिया के लिंग, वचन भाव के अनुसार होती क्रियाएँ भाववाच्य कहलाती हैं।
   जैसे- मोहन से चला नहीं जाता।
   - मुझसे पत्र लिखा नहीं जाता है।

वाच्य परिवर्तन

1- कर्तृवाच्य :
मैं खाना खाऊँगा।।
ओजस्व गीत सुन रहा है।
मैं पत्र लिखती हूँ।

2- कर्मवाच्य :
मुझसे खाना खाया जाएगा।
ओजस्व से गीत सुने जा रहे हैं।
मेरे द्वारा पत्र लिखा जाता है।

3- भाववाच्य :
उससे चला नहीं जा सकता।
बच्चों से चुप नहीं बैठा जाता।
कोमल से रोया जा रहा है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1. जिस वाक्य में भाव प्रधान हो, क्रिया एकवचन पुल्लिंग हो वह कहलाता है।
   (i) भावानुसार वाच्य (ii) भाववाच्य
   (iii) कर्मवाच्य (iv) कर्तृवाच्य
2. जिस वाक्य में कर्म प्रधान हो, क्रिया कर्म के अनुसार आए वह होता है।
   (i) कर्मवाच्य (ii) कर्तृवाच्य
   (iii) भाववाच्य (iv) कोई अन्य
3. जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो, क्रिया कर्ता के अनुसार आए तो वह होता है।
   (i) कर्तावाच्य (ii) कर्तृवाच्य
   (iii) कर्मवाच्य (iv) भाववाच्य
4. वाच्य के कितने भेद होते हैं।
   (i) तीन (ii) दो
   (iii) चार (iv) पाँच
5. जब क्रिया का प्रधान विषय कर्ता हो तो होता है।
   (i) कर्मवाच्य (ii) भाववाच्य
   (iii) कर्तृवाच्य (iv) इनमें से कोई नहीं
6. जिस क्रिया में भाव की प्रधानता होती है, तब होता है।
   (i) भाववाच्य (ii) कर्मवाच्य
   (iii) कर्तृवाच्य

उत्तर-

1. (ii) 2. (i) 3. (ii) 4. (i) 5. (iii) 6. (i)

लेखन-विभाग

विज्ञापन लेखन

'मोहित' बैग बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

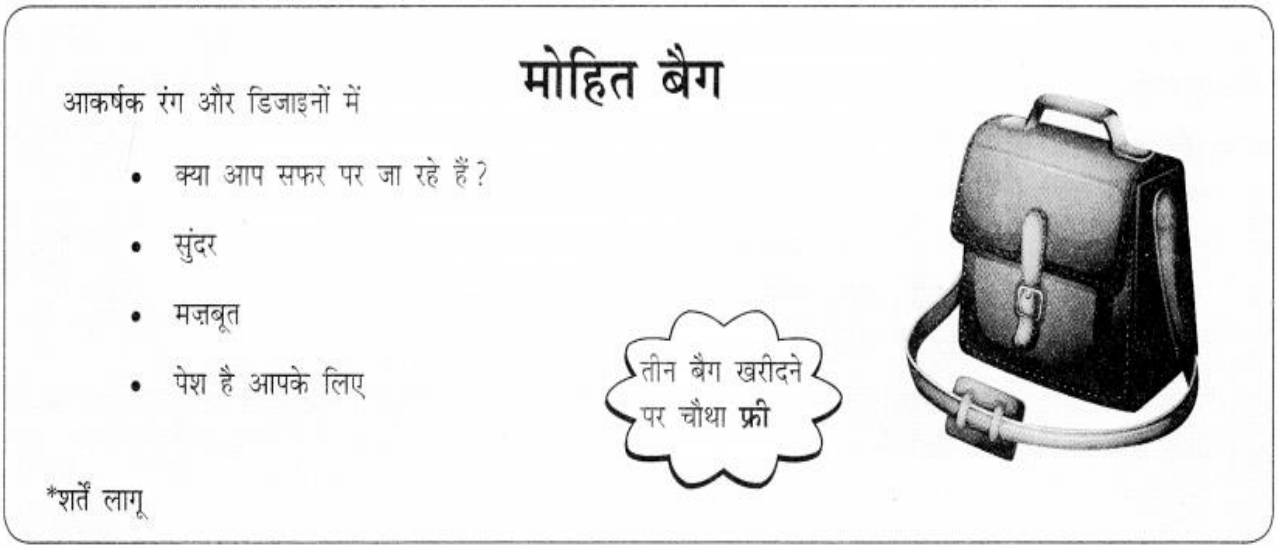

➢ **गतिविधि- श्री कृष्ण अथवा सुदामा का चित्र बनाओ।**

पाठ-13 जहाँ पहिया है

-लेखक – पालगम्मीसाईनाथ
- जन्म – 1957
- जन्मस्थान – मद्रास

➢ पाठ का सार –

"जहाँ पहिया है" पाठ के लेखक "पालगम्मी साईनाथ जी" हैं। पालगम्मी साईनाथ जी इस लेख के द्वारा एक साईकिल आंदोलन की बात करते हैं और तमिलनाडू के क्षेत्र में प्रसिद्ध जिले में किस तरह से महिलाऐं साइकिल के पहिऐ को एक आंदोलन का रूप देती हैं और किस तरह से वह स्वतंत्र होती हैं। अपने घर और सामाज से बाहर निकलकर आत्मनिर्भर बनती हैं। साईकिल का पहिया एक साधान के रूप में प्रस्तुत होता है और उसका उपयोग होता है एक बहुत ही बड़े आंदोलन के रूप में जहाँ पर पुरुष प्रधान सामाज में पहले स्त्रियों को किसी भी तरह की स्वतंत्रता नहीं थी, कोई भी काम करने की या घर से बाहर जाकर कमाने की। लेकिन इस पहिये के ही द्वारा उनमें आत्मनिर्भरता जागी और उन्होंने अपने काम स्वंय करने आंरभ किए, अब वे बिलकुल स्वतंत्रता से अपने कार्य करती हैं और उनमें एक नई आज़ादी का अनुभव या संचार हुआ है।इस लेख में तमिलनाडु के एक गरीब जिले में होने वाले सामाजिक परिवर्तन तथा आंदोलन का वर्णन कर रहे हैं। लेखक के अनुसार लोग रूढ़ियों से मुक्त होने के लिये रास्ते चुनते हैं। कई बार वे बहुत अजीब होते हैं जैसे उक्त जिले में अपनी पहचान प्रदर्शित करने के लिए साइकिल का चयन किया। वहाँ नव साक्षर लड़कियाँ, महिलाएँ साइकिल चलाती हैं। लेखक के अनुसार साइकिल चलाने संबंधी इस आंदोलन ने महिलाओं के न सिर्फ आर्थिक पक्ष को मजबूत किया बल्कि उनमें एक नए आत्मविश्वास का संचार भी हुआ।

➢ शब्दार्थ

1- चौंकने- हैरानी
2- नवसाक्षर- नयीपढ़ीलिखी
3- स्वाधीनता-आज़ादी
4- गतिशीलता- प्रगति
5- अभिव्यक्त- प्रकट
6- प्रतीक- निशानी
7- नवसाक्षर- नयी पढ़ी लिखी
8- कौशल- प्रवीणता
9-शिविर- सीखने के कैंप
10- फब्तियाँ- ताने
11-हैसियत- औकात

➢ सही विक्ल्प चुनकर लिखो।

1- पुडुकोट्टई जिले में साइकिल चलाने का कैसा आंदोलन चला?
(a) राष्ट्रीय आंदोलन (b) सामाजिक आंदोलन
(c) धार्मिक आंदोलन (d) प्रादेशिक आंदोलन
Answer: (b) सामाजिक आंदोलन

2- पुडुकोट्टई जिला किस प्रदेश में है?
(a) केरल (b) आंध्रप्रदेश
(c) तमिलनाडु (d) कर्नाटक
Answer: (c) तमिलनाडु

3- ग्रामीण महिलाओं ने साइकिल रूप में चुना है?
(a) स्वाधीनता (b) आजादी
(c) गतिशीलता (d) उपर्युक्त सभी
Answer: (d) उपर्युक्त सभी

4- पुडुकोट्टई की गणना भारत के सर्वाधिक जिलों में की जाती है?
(a) शिक्षित (b) अशिक्षित
(c) खनिज से भरपूर (d) पिछड़े
Answer: (c) खनिज से भरपूर

5- साइकिल प्रशंसक हैं-
(a) महिला खेतिहर
(b) पत्थर खदानों में मजदूरी करने वाली औरतें
(c) गाँवों के घरों में सफाई करने वाली महिलाएँ
(d) उपर्युक्त सभी
Answer: (b) पत्थर खदानों में मजदूरी करने वाली औरतें

➢ प्रश्नो के उत्तर लिखो।

प्रश्न-1 'साइकिल आंदोलन' से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौनहैं आए बदलाव से कौन-?

उत्तर – साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कई बदलाव आए हैं-

(i) साइकिल आंदोलन से महिलाएँ छोटेलगी। करने स्वयं काम के बाहर मोटे-
(ii) साइकिल आंदोलन से वे अपने उत्पाद कई गाँव में ले जाकर बेचने लगी।
(iii) साइकिल आंदोलन से उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी है।

(iv) साइकिल आंदोलन से समय और श्रम की बचत हुई है।
(v) साइकिल आंदोलन ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया।

प्रश्न-2 शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर इसका ने मालिक के साइकिल्स-समर्थन किया, क्यों?

उत्तर – शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आरस-ाइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्योंकि आर कम साइकिल लेडीज़ की तक यहाँ थी। रही हो वृद्धि में आय की मालिक के साइकिल्स-होने से महिलाऐ जेंट्स साइकिल भी खरीद रही थी। आर समर्थन का आंदोलन ने मालिक के साइकिल्स-स्वार्थवश किया।

प्रश्न-3 प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौनआई बाधा सी कौन-?

उत्तर – प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-
(i) सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
(ii) महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।
(iii) महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

प्रश्न-4 आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम जहाँ पहिया है? क्यों रखा होगा?

उत्तर – पहिया गति का प्रतीक है। लेखक ने इस पाठ का नाम 'जहाँ पहिया है' तमिलनाडु के पुडुकोट्टई गाँव के साइकिल आंदोलन के कारण ही रखा होगा। उस जिले की महिलाओं ने साइकिल चलाना शुरू किया, तब से उनकी परिस्थिति में सुधार आया तथा उनके विकास को गति मिली। इसिलए लेखक कहते है कि ये बात उस जिले की है 'जहाँ पहिया है'।

व्याकरण

वचन और लिंग संबंधी अशुधियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
शिवा जी बहुत वीर था।	शिवा जी बहुत वीर थे।
हवा बहुत ठंडा है।	हवा बहुत ठंडी है।
बच्चा छत पर से गिर गया।	बच्चा छत से गिर गया।
पतंगें आकाश पर उड़ रही है।	पतंगें आकाश में उड़ रही हैं।
मेरे को जल्दी जाना है।	मुझे जल्दी जाना है।
वह लड़के को बुला लाओ	उस लड़के को बुला लाओ।
नेहा ने गीत गाई ।	नेहा ने गीत गाया।
सभी मिलकर स्कूल जाता है।	सभी मिलकर स्कूल जाते हैं।
विख्यात लुटेरा पड़का गया।	कुख्यात लुटेरा पकड़ा गया।
मेरे पास अनेकों पुस्तके हैं।	मेरे पास अनेक पुस्तकें हैं।
अचानक बस चल पड़ी।	बस अचानक चल पड़ी।

लेखन-विभाग

पत्र लेखन

डाकिए की डाक बाँटने के लिए अनियमितता की शिकायत।
सेवा में
डाकपाल महोदय
अंकुर विहार डाकखाना
लोनी, गाजियाबाद।
विषय – डाकिए की डाक बाँटने की अनियमितता के विषय में पत्र
महोदय
सविनय निवेदन यह है कि हमारे क्षेत्र अंकुर विहार गाजियाबाद में गत पाँच-छह महीने से डाक वितरण अनियमितता से स्थानीय निवासी परेशान हैं।
इस क्षेत्र में प्रतिदिन डाक वितरण नहीं होता। डाकिए सप्ताह में केवल एक या दो बार आते हैं तथा मुहल्ले के गेट पर खड़े चौकीदारों को सभी पत्र थमा कर चले जाते हैं। कई बार पत्र गलत पते पर डालकर चले जाते हैं जिससे और भी अधिक परेशानी उठानी पड़ती है। जरूरी डाक तथा तार समय पर न मिलने से कई लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा तथा कुछ बच्चों के दाखिले भी नहीं हो पाए। ये सभी डाकिए त्योहार पर रुपए माँगने तो आ जाते हैं पर डाक देने नहीं। किसी-किसी ने तो मनी आर्डर की राशि भी पूरी न मिलने की शिकायत की है।
आशा है आप उक्त अनियमितताओं को दूर करने के लिए उचित कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद
भवदीय
आयुष रंजन तिवारी

- **गतिविधि- जहाँ पहिया है का चित्र बनाओ।**

पाठ-14 अकबरी लोटा

लेखक – अन्नपूर्णानन्दवर्मा
जन्म – 21 सितंबर 1895 (काशी, उत्तरप्रदेश)
मृत्यु – 04 दिसंबर 1962

➢ पाठ का सार

अन्नपूर्णानन्द की कहानी "अकबरी लोटा" एक हास्य पूर्ण कहानी है। लेखक ने कहानी को बहुत ही रोचंक तरीके से प्रस्तुत किया गया है और साथ के साथ बताया गया है कि परेशानी के समय में परेशान न होकर समझदारी से किस तरह से एक समस्या का हल निकाला जा सकता है और दूसरी बात इस कहानी में यह भी बताया गया है कि एक सच्चा मित्र ही मित्र के काम आता है और उसके लिए बहुत कुछ कर गुजर जाता है। कहानी के माध्यम से लेखक हमें सीख देना चाहता है कि सही वक़्त पर सही समझ का उपयोग करना कितना जरुरी है। इस कहानी के मुख्य पात्र हैं – लाला झाऊलाल और उनके मित्र पंड़ित बिलवासी मिश्र जी।

➢ शब्दार्थ

1- ढाईसौ – 250
2- रोब – अकड़
3- प्रतिष्ठा – इज्जत
4- गाथाएँ – कहानियाँ
5- दुम – पूंछ
6- विपदा – मुसीबत
7- खुक्ख – खालीहाथ
8- प्रकट – उपस्थित
9- बेढ़ंगी – बेकार
10- वेग – गति

11-ओझल – गायब
12- ईजाद – खोज
13- प्रधान – मुख्य
14- पूर्व – पहले
15- विज्ञ – ज्ञानी
16- सुशिक्षित – पढ़ा-लिखा

➢ सही विक्ल्प चुनकर लिखो।

1- लाला जी को अचानक कितने रुपयों की आवश्यकता हुई ?
(a) एक सौ रुपये की
(b) डेढ़ सौ रुपए की
(c) दो सौ रुपये की
(d) ढाई सौ रुपये की
Answer: (d) ढाई सौ रुपये की

2- लाला झाऊलाल ने रौब से पत्नी को क्या कहा?
(a) तुम्हें रुपये किसलिए चाहिए
(b) अभी रुपए नहीं हैं
(c) भाई से भी माँगने की ज़रूरत नहीं, मुझसे ले लेना
(d) कहीं से लाकर दे दूंगा
Answer: (c) भाई से भी माँगने की ज़रूरत नहीं, मुझसे ले लेना

3- झाऊलाल ने पत्नी को रुपए देने में कितने दिन का समय लगा दिया?
(a) पाँच दिन
(b) सात दिन
(c) दो दिन
(d) चार दिन
Answer: (b) सात दिन

4- लोटा नीचे किससे गिरा?
(a) झाऊलाल से
(b) झाऊलाल की पत्नी से
(c) अंग्रेज़ से
(d) बिलवासी से
Answer: (a) झाऊलाल से

5- लाला झाऊलाल के हाथ से जब लोटा गिरा था तब वह कौन-सी मंजिल पर खड़े थे?
(a) दूसरी मंजिल
(b) तिनमंजिले पर
(c) चौथी मंजिल पर
(d) पाँचवीं मंजिल पर
Answer: (b) तिनमंजिले पर

6- पंडित बिलवासी जी क्यों आए थे?
(a) झाऊलाल से मिलने
(b) लाला झाऊलाल को ढाई सौ रुपये देने
(c) अंग्रेज़ का मित्र
(d) पुलिस
Answer: (b) लाला झाऊलाल को ढाई सौ रुपये देने

प्रश्न-1 अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा कितने में खरीदा?

उत्तर – अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा पाँच सौ रूपए में खरीदा।

प्रश्न-2 न्यूटन कौन थे?

उत्तर – न्यूटन इंग्लैंड के एक वैज्ञानिक थे जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम और गति के सिद्धांत की खोज की थी।

प्रश्न-3 अगर बिलवासी जी लाला जी की मदद नहीं करते तब क्या होता?

उत्तर – अगर बिलवासी जी लाला जी की मदद नहीं करते तब भी किसी न किसी तरह लाला जी रुपयों का इंतज़ाम जरूर करते क्योंकि यह उनकी प्रतिष्ठा का सवाल था।

प्रश्न-4 बिलवासी जी ने अपनी पत्नी के गले से सिकड़ी क्यों निकाली?

उत्तर – बिलवासी जी ने अपनी पत्नी के गले से सिकड़ी इसलिए निकाली क्योंकि उसमें लगी ताली से वह संदूक खोलना चाहते थे ताकि ढाई सौ रूपये वापस रख सकें।

प्रश्न-5 यदि बिलवासी की योज़ना अंग्रेज़ को पता चल जाती तो क्या होता?

उत्तर – यदि बिलवासी की योज़ना अंग्रेज़ को पता चल जाती तो लाला जी की पत्नी के लिए रुपयों का प्रबंध नहीं हो पाता और अंग्रेज़ उन दोनों को धोखा देने के आरोप में जेल भी भिजवा सकता था।

प्रश्न-6 बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था? लिखिए।

उत्तर – बिलवासी जी ने लाला झाऊलाल की मदद करने के लिए अपनी पत्नी के संदूक से चोरी करके रूपयों का प्रबंध किया था। परन्तु समस्या का हल निकल जाने पर उन्होंने वे ढाई सौ के नोट ज्यों त्यों वापस अपनी पत्नी - के - के संदूक में रख दिए थे।

प्रश्न-7 जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह कहाँ था?

उत्तर – जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह एक दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था।

प्रश्न-8 गली में ज़ोर का हल्ला क्यों हो रहा था?

उत्तर – गली में ज़ोर का हल्ला इसलिए हो रहा था क्योंकि लाला जी के हाथ से जल का भरा हुआ लोटा छूट कर नीचे किसी व्यक्ति के पैर पर गिर गया था।

प्रश्न-6 क्या होता यदि जब बिलवासी अपनी पत्नी के गले से चाबी निकाल रहे थे, तभी उनकी पत्नी जाग जाती?

उत्तर – गले से चाबी निकालते समय यदि बिलवासी जी की पत्नी जग जाती तो अपनी पत्नी के समक्ष उन्हें शर्मिंदा होना पड़ता।

व्याकरण

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरा ऐसा शब्द-समूह या वाक्यांश होता है जो अपने शाब्दिक अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है। विशेष अर्थ में प्रयुक्त होने वाले ये वाक्यांश ही मुहावरे कहलाते हैं। जैसे नौ-दो ग्यारह होना मुहावरे का अर्थ है- भाग जाना।

लोकोक्ति यानी लोक की उक्ति अर्थात लोगों द्वारा कही गई उक्ति। ये अपने आप में पूर्ण वाक्य होती है। इनका प्रयोग अधिकांशतः वाक्य के अंत में एक स्वतंत्र वाक्य के रूप में होता है जबकि मुहावरों का प्रयोग वाक्य के मध्य में होता है।

मुहावरों में प्रयोग करते समय मुहावरों की क्रिया, लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार बदल जाती है।

अंधे की लकड़ी (एकमात्र सहारा) – श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए अंधे की लाठी था।
अगर-मगर करना (बहाने बनाना) – जब मैंने अपने मित्र से मुसीबत के समय सहायता माँगी तो वह अगर-मगर करने लगा।
कान भरना (चुगली करना) – ज्ञान को कान भरने की बुरी आदत है।
कोई जोड़ न होना (मुकाबला न होना) – नेहा की लिखाई का कोई जोड़ नहीं है।
कलई खुलना (भेद खुलना) – पड़ोसी के घर में रोज महँगे-महँगे समान आ रहे थे। अचानक एक दिन पुलिस के आने से उसकी सारी कलई खुल गई।
घी के दिए जलाना (खुशियाँ मनाना) – बेटे के आई. ए. एस. बनने पर माँ-बाप ने घी के दिए जलाए।
तूती बोलना (बहुत प्रभाव होना) – रमेश बाबू के समाज-सेवी होने की तूती सारे शहर में बोल रही है।
हवा से बातें करना (बहुत तेज दौड़ना) – बुलेट ट्रेन हवा से बातें करती है।
सिर धुनना (पछताना) – छात्र अपना खराब परीक्षा परिणाम देखकर अपना सिर धुनने लगा।
कसर निकालना (कमी पूरी करना) – व्यापारियों ने त्योहारों के अवसर पर वस्तुओं को अत्यधिक दामों पर बेचकर कसर निकाल लेते हैं।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति का अर्थ होता है-लोक की उक्ति अर्थात लोगों द्वारा कही गई बात। इसमें लौकिक जीवन का सत्य एवं अनुभव समाया होता है, ये स्वयं में एक पूर्ण वाक्य होती है; जैसे-अधजल गगरी छलकत जाए। इसका अर्थ है-कम जानकार द्वारा अपने गुणों का बखान करना।

अधजल गगरी छलकत जाए (कम जानने वाला व्यक्ति अधिक दिखावा करता है।) –
समीर को चपरासी की सरकारी नौकरी क्या मिल गई, पूरे गाँव में किसी से सीधे मुँह बात नहीं करता।
इसे कहते हैं – अधजल गगरी छलकत जाए।
आम के आम गुठलियों के दाम (दोहरा लाभ) – मैं परीक्षा देने दिल्ली जा रही हूँ। लाल-किला और इंडिया गेट देख लँगी। इसे कहते हैं आम के आम गुठलियों के दाम।
अंधों में काना राजा (मूर्खा में थोड़ा जानने वाला व्यक्ति भी आदर पा जाता है।) –
पूरे गाँव में मदनलाल,ही आठवीं पास है। गाँव वाले उसे विद्वान समझकर उसका आदर करते हैं। इसी को कहते हैं अंधों में काना राजा।।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता (अकेला आदमी कुछ नहीं कर सकता) – सामाजिक बुराईयों से लड़ने के लिए हमें सबको एक साथ होकर लड़ाई लड़नी होगी। आपने सुना ही होगा कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
अपना हाथ जगन्नाथ (परिश्रम से ही सफलता मिलती है।) – दूसरों की कृपा पर जिंदा रहने से तो अच्छा है, परिश्रम करके खाओ, क्योंकि अपना हाथ जगन्नाथ।
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे-(अपराध करने वाला उलटी धौंस जमाए) – बबीत ने मेरा कॉपी चुरा लिया। उससे पूछा तो लड़ने लगा। इसी को कहते हैं – उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।।
एक अनार सौ बीमार-(एक वस्तु के अनेक चाहने वाले) – नौकरी में पाँच पद के लिए पचास हजार आवेदन पत्र देखकर एक अनार सौ बीमार वाली कहावत चरितार्थ होती है।
खोदा पहाड़ निकली चुहिया-(अधिक परिश्रम करने पर कम लाभ) – पूरे वर्ष कठिन परिश्रम करने के बाद जब मंथन कक्षा में 25 प्रतिशत अंक ला पाया, तो उसके मुँह से यही निकला खोदा पहाड़, निकली चुहिया।
ऊँची दुकान फीके पकवान-प्रसिद्धि के अनुरूप गुणों का न होना – हमने तो इस दुकान का नाम सुनकर इससे सामान खरीदा था, पर वह बहुत ही घटिया निकला। इसे कहते हैं ऊँची दुकान फीके पकवान।
दूध का दूध पानी का पानी (स्पष्ट न्याय करना) – राजा विक्रमादित्य दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया करते थे।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा (खुद काम न आने पर दूसरों को दोष देना) – गाना तो उससे ठीक से गाया नहीं गया और दोष देने लगा तबला बजाने वाले को। इसे कहते हैं नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

लेखन-विभाग

अनुच्छेद लेखन-

समाचार-पत्र : ज्ञान और मनोरंजन का साधन

- जिज्ञासा पूर्ति का सस्ता एवं सुलभ साधन
- रोज़गार का साधन
- समाचार पत्रों के प्रकार
- जानकारी के साधन ।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अपने समाज और आसपास के अलावा देश-दुनिया की जानकारी के लिए जिज्ञासु रहता है। उसकी इस जिज्ञासा की पूर्ति का सर्वोत्तम साधन है-समाचार-पत्र, जिसमें देश-विदेश तक के समाचार आवश्यक चित्रों के साथ छपे होते हैं। सुबह हुई नहीं कि शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार पत्र विक्रेता घर-घर तक इनको पहुँचाने में जुट जाते हैं। कुछ लोग तो सोए होते हैं और समाचार-पत्र दरवाजे पर आ चुका होता है।
अब समाचार पत्र अत्यंत सस्ता और सर्वसुलभ बन गया है। समाचार पत्रों के कारण लाखों लोगों को रोजगार मिला है। इनकी छपाई, ढुलाई, लादने-उतारने में लाखों लगे रहते हैं तो एजेंट, हॉकर और दुकानदार भी इनसे अपनी जीविका चला रहे हैं। इतना ही नहीं पुराने समाचार पत्रों से लिफ़ाफ़े बनाकर एक वर्ग अपनी आजीविका चलाता है। छपने की अवधि पर समाचार पत्र कई प्रकार के होते हैं।
प्रतिदिन छपने वाले समाचार पत्रों को दैनिक, सप्ताह में एक बार छपने वाले समाचार पत्रों को साप्ताहिक, पंद्रह दिन में छपने वाले समाचार पत्र को पाक्षिक तथा माह में एक बार छपने वाले को मासिक समाचार पत्र कहते हैं। अब तो कुछ शहरों में शाम को भी समाचार पत्र छापे जाने लगे हैं। समाचार पत्र हमें देश-दुनिया केसमाचारों, खेल की जानकारी मौसम तथा बाज़ार संबंधी जानकारियों के अलावा इसमें छपे विज्ञापन भी भाँति-भाँति की जानकारी देते हैं।

- **गतिविधि- राजा अकबर का चित्र बनाओ।**

कविता- 15 सूर के पद

-

कवि सूरदास
जन्म 1478 ईस्वी
मृत्यु 1580 ईस्वी

कविता का सार- यहां महाकवि सूरदास जी के दो पद दिए गए हैं। दोनों ही पद श्रीकृष्ण की बाललीलाओं पर केंद्रित हैं। इनकी भाषा बड़ी ही सरल, प्यारी और मंत्रमुग्ध कर देने वाली है।प्रथम पद में सूरदास जी श्रीकृष्ण के बालपन के एक किस्से के बारे में बता रहे हैं। जब यशोदा माँ कान्हा को दूध पिलाने के लिए ये कह देती हैं कि इससे उनकी चोटी बलराम जितनी लंबी और मोटी हो जाएगी। मगर काफी दिन दूध पीने के बाद भी कान्हा को अपनी चोटी छोटी ही दिखती है। तब वो यशोदा माँ से इस बारे में पूछने लगते हैं।द्वितीय पद में सूरदास जी ने श्रीकृष्ण की माखनचोरी के बारे में बताया है। कान्हा अपने सभी सखाओं के साथ मिलकर, गोपियों के घर से माखन में पद इस हैं। जाते फैला पर जमीन माखन कुछ और हैं जाते खा कर चुरा (मक्खन) गोपियां यशोदा माँ को इसी बात का उलाहना देने आई हैं।

शब्दार्थ

1-कबहिं- कब
2-किती- कितनी
3-पियत- पिलाना
4-अजहूँ- आज भी
5- बल- बलराम
6-बेनी- चोटी
7-काढ़त- बाल बनाना
8- गुहत- गूँथना
9- न्हवावत- नहलाना
10-भुइँ- भूमि
11-लोटी- लोटनेलगी
12-काचौ- कच्चा
13- पियावति- पिलाती
14-लाल- बेटा
15-माखन- मक्खन
16- दुपहर- दोपहर
17- ढूँढ़ि- खोजकर
18-आपही- अपनेआप
19-किवारि- दरवाजा
20- पैठि- घुसकर
21-सखनि- दोस्त/मित्र
22-उखल- ओखली

➢ सही विक्ल्प चुनकर लिखो।

1- कृष्ण माता से क्या पूछ रहे हैं?
(a) वे कब ग्वाल बाल के साथ खेलने जाएँगे
(b) माँ उन्हें कब माखन-रोटी देगी
(c) उनकी चोटी कब बढ़ेगी।
(d) वे कब सखा के साथ खेलने जाएँगे
Answer: (c) उनकी चोटी कब बढ़ेगी।

2- इस पद की रचना किसने की?
(a) सूरदास
(b) तुलसीदास
(c) कबीरदास
(d) रविदास
Answer: (c) कबीरदास

3- कृष्ण को क्या खाना अच्छा लगता है?
(a) दूध-मलाई
(b) माखन-रोटी
(c) दही-दूध
(d) कच्चा दूध
Answer: (b) माखन-रोटी

4-गोपी ने यशोदा को किसकी शिकायत की?
(a) बलराम
(b) बाल सखा
(c) कृष्ण
(d) पड़ोसी की
Answer: (c) कृष्ण

5- निम्नलिखित में से किसकी सहायता से कृष्ण छीके तक पहुँच सके थे?

(a) मेज (b) कुरसी

(c) ओखल (d) बेंच

Answer: (c) ओखल

6- कृष्ण किस समय गोपियों के घर से मक्खन चुराते थे?

(a) प्रातः (b) दोपहर

(c) शाम (d) रात

Answer: (b) दोपहर

➢ प्रश्नो के उत्तर लिखो।

प्रश्न-1 श्रीकृष्ण किस पर चढ़ कर माखन चुराते थे?

उत्तर – श्रीकृष्ण ऊखल पर चढ़ कर माखन चुराते थे।

प्रश्न-2 'सूरदास के पद' में किस भाषा का प्रयोग हुआ है?

उत्तर – 'सूरदास के पद' में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न-3 दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौनसे खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं-?

उत्तर – दूध की तुलना में श्रीकृष्ण माखनरोटी को अधिक पसंद करते हैं।-

प्रश्न-4 श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर – श्रीकृष्ण के पर्यायवाची शब्द – घनश्याम, मुरारी, माधव, गोपाल, मुरलीधर।

प्रश्न-6 श्रीकृष्ण दोपहर में माखन क्यों चुराते थे?

उत्तर – दोपहर के समय घर सूना होता था। सब अपने - अपने काम पर चले जाते थे इसलिए श्रीकृष्ण दोपहर में माखन चुराते थे।

प्रश्न-7 दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?

उत्तर – दूसरे पद को पढ़कर लगता है कि उस समय श्रीकृष्ण की उम्र सात - आठ वर्ष रही होगी।

प्रश्न-8 बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर

बालक श्रीकृष्ण इस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए कि उनके बालों की चोटी भी बलराम भाई की चोटी के समान लंबी और मोटी हो जाएगी। उनकी चोटी भी नागिन की समान लोटती दिखाई देगी।

प्रश्न-9 श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्याक्या सोच रहे थे-?

उत्तर – श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि इतने समय से वह दूध पी रहे हैं फिर भी उनकी चोटी छोटी है, कब उनकी चोटी बलराम भैया की तरह लंबी और मोटी होगी? कब उनकी चोटी नागिन की तरह लहराने लगेगी?

प्रश्न-10 'तैं ही पूत अनोखौ जायौ'- पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौनसे भाव मुखरित हो रहे हैं-?

उत्तर – यहाँ पर ग्वालन के हृदय में यशोदा के लिए क्रोध के भाव मुखरित हो रहे हैं। ग्वालिन माँ यशोदा को उलाहना देते हुए कहती हैं कि उनका पुत्र अनोखा है कि मना करने पर भी चोरी करता है और पकड़े जाने पर अपनी गलती नहीं मानता।

व्याकरण

विरामचिह्न-

'विराम' का अर्थ है- 'रुकना। अपने भावों तथा विचारों को सही रूप तथा सही ढंग से संप्रेषित करने के लिए विराम-चिहनों का ज्ञान होना जरूरी है। हिंदी भाषा में अपने भावों तथा विचारों को लिखते अथवा बोलते समय अपनी बात पर बल देने के लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए गए हैं, ये चिह्न ही विराम-चिह्न कहलाते हैं।

भाषा के लिखित रूप में विराम देने अथवा रुकने के लिए जिन संकेत चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

हिंदी में प्रयोग किए जाने वाले कुछ प्रमुख चिह्न हैं

1. पूर्ण विराम (।) – पूर्ण विराम का अर्थ है-पूरी तरह रुकना। वाक्य पूरा होने पर अंत में पूर्ण विराम लगाया जाता है; जैसे-पक्षी दाना चुग रहे हैं। नेहा कविता लिख रही है।
2. अल्प विराम (,) – अल्प विराम का अर्थ है-थोड़ा विराम। वाक्य बोलते समय जब हम थोड़ा रुकते हैं, तब अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे-नंदन वन में शेर, हाथी, हिरन, भेड़िया, बकरी तथा भालू सभी मिलकर रहते हैं।
3. प्रश्नसूचक चिह्न (?) – इसका प्रयोग प्रश्नसूचक वाक्य के अंत में होता है; जैसे-तुम कहाँ जा रहे हो? वह कौन है?
4. अर्ध विराम (;) – वाक्य लिखते या बोलते समय, एक बड़े वाक्य में एक से अधिक छोटे वाक्यों को जोड़ने के लिए अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे-कपास से सूत तैयार किया जाता है; सूत से कपड़ा बनता है।
5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!) – मन के भाव यानी हर्ष (खुशी) शोक, भय, आश्चर्य, घृणा आदि को प्रकट करने वाले वाक्यों में विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-(i) छि! यहाँ कितनी गंदगी है। (ii) वाह! कितनी सुंदर जगह है।
6. योजक चिह्न (-) – तुलना करने वाले शब्दों तथा शब्द-युग्मों के साथ योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे–माता पिता, लड़का-लड़की, रात-दिन आदि।
7. लाघव चिह्न (०) – किसी शब्द का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव के चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे-डॉ० राजेंद्र प्रसाद, पं० जवाहर लाल नेहरू।।
8. उद्धरण चिह्न-(' ') (" ")
   उद्धरण चिह्न दो प्रकार के होते हैं-
   (i) इकहरा उद्धरण चिह्न (' ') – इस चिह्न का प्रयोग किसी अक्षर, शब्द, किताब-वस्तु या व्यक्ति का नाम लिखने के लिए किया जाता हैं; जैसे-रामधारी सिंह 'दिनकर' महान कवि थे।
9. कोष्ठक () – किसी कठिन शब्द का अर्थ लिखने के लिए, किसी बात को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त अंक लिखने के लिए भी कोष्ठक प्रयुक्त होते हैं।

10. अपूर्ण विराम-चिह्न (:) – जहाँ वाक्य पूरा नहीं होता, बल्कि किसी वस्तु अथवा विषय के बारे में बताया जाता है, वहाँ अपूर्ण विराम-चिह्न. का प्रयोग किया जाता है; जैसे कृष्ण के अनेक नाम हैं-मोहन, गोपाल, गिरिधर आदि।
11. हंस पद (') – लिखते समय यदि कोई अंश छूट जाए तो यह चिह्न लगाकर उस अंश को ऊपर लिख देते हैं; अर्जुन एक कुशल धनुर्धर थे।

लेखन-विभाग

यह चित्र दीपावली के त्योहार का है। यह त्योहार खुशियों का प्रकाश का त्योहार कहलाता है। चित्र में एक घर है जिसके सामने एक पंक्ति में दिए जल रहे हैं। घर के सामने एक बड़ा-सा मैदान है जहाँ बच्चे दीवाली का त्योहार मनाते दिखाई दे रहे हैं। दो बच्चे एक-दूसरे को मिठाई खिला रहे हैं। पास में एक लड़की खुशी से चहकती हुई मिठाई लेने के लिए हाथ बढ़ा रही है। उनके पीछे एक बच्चा अनार छुड़ाकर उसमें से निकलती रोशनी को देखकर खुश हो रहा है। दो बच्चे (शायद भाई बहन) पटाखे को छुड़ाने की तैयारी में हैं। पूरा चित्र खुशी की झलक दे रहा है।
जन-जन ने हैं दीप जलाए, लाखों और हजारों ही
धरती पर आकाश आ गया, शोभा लिए सितारों की।

गतिविधि- श्री कृष्ण का चित्र बनाओ।